7

सतत एवं समग्र मूल्यांकन

मिलन सिंह*

विगत कुछ वर्षों से परीक्षा-सुधार कार्यक्रम के रूप में सतत एवं समग्र मूल्यांकन का विचार शैक्षिक जगत में चर्चा का विषय रहा है। सतत एवं समग्र मूल्यांकन का प्रत्यय वस्तुतः परीक्षा सुधार के दो सिद्धांतों पर आधारित है-प्रथम, जो व्यक्ति अध्यापन कार्य करे, वही व्यक्ति मूल्यांकन भी करे तथा द्वितीय, मूल्यांकन कार्य सत्रंत में न होकर संपूर्ण सत्र के दौरान लगातार होता रहे। उक्त आलेख के माध्यम से सतत एवं समग्र मूल्यांकन को कक्षागत परिस्थितियों में कैसे अच्छे ढंग से लागू किया जा सकता है एवं इसके लागू करने में आने वाली कठिनाइयों के बारे में विस्तार से चर्चा की गई है।

वर्तमान समय में विज्ञान एवं तकनीक के उच्चतम विकास को देखते हुए विगत वर्षों से चली आ रही मूल्यांकन पद्धति में परिवर्तन करने की आवश्यकता समझी गई। मूल्यांकन एक प्रक्रिया न होकर एक ऐसी घटना मात्र बनकर रह गई थी जिसकी नींव कागज़-कलम पर आधारित सत्रीय परीक्षाएँ भर थीं। कई बार ऐसा भी पाया गया कि नवीन विचार एवं कुशल मौखिक अभिव्यक्ति के बावजूद भी छात्र एवं छात्राओं का परिणाम अपेक्षा से बहुत कम था शायद वे छात्र एवं छात्राएँ लेखन की वजह से पिछड़ रहे थे। केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद् ने सतत एवं समग्र मूल्यांकन पद्धति को लागू करने का निर्णय किया। प्रारंभ में कुछ असमंजस की स्थिति बनी रही क्योंकि स्पष्ट दिशा-निर्देशों का अभाव था। अतः हम अध्यापकों के समक्ष एक बड़ी चुनौती आई कि सतत एवं समग्र मूल्यांकन का प्रयोग कक्षा में कैसे करेंगे? गहन सोच-विचार की आवश्यकता थी, एक समग्र मूल्यांकन परियोजना बनाने की आवश्यकता थी, क्योंकि अभी तक मूल्यांकन का आधार छात्र-छात्राओं की लिखित परीक्षा मात्र थी। मौखिक व रचनात्मक आधार नगण्य-सा था। मन के किसी कोने में यह प्रश्न भी था कि कहीं सतत एवं समग्र मूल्यांकन पद्धति महज़ औपचारिकता बनकर न रह जाए। शिक्षा विभाग द्वारा थोड़े बहुत दिशा-निर्देश हमें मिले तो मन की धुँध छँट गई। हमने छात्राओं को एक प्रयोज्य की भाँति न रखकर एक प्रयोगकर्ता के रूप में रखा तो कुछ कठिनाइयों के बाद आश्चर्यजनक

* राजकीय सर्वोदय कन्या विद्यालय, बुराड़ी, दिल्ली-110084

परिणाम भी आए। उदाहरणस्वरूप हिंदी शिक्षण के दौरान मैंने छात्राओं को मँहगाई व भ्रष्टाचार तथा ईदगाह कहानी (मुंशी प्रेमचंद) को कार्टून के माध्यम से अभिव्यक्त करने को कहा तो छात्राओं ने सुंदर कार्टून बनाने के साथ-साथ चुटीले हास्य व्यंग्य वाक्यों का प्रयोग किया। उनके विचार पढ़कर उनकी रचनात्मकता का पता चला। कुछ छात्राओं का प्रदर्शन हमारी आशाओं से कई गुना ऊपर था, उन्हें केवल दिशा-निर्देश की आवश्यकता थी, लेकिन कुछ छात्राओं से प्रत्युत्तर पाने व प्रदर्शन करने में काफी कठिनाइयाँ आई। क्योंकि अभिव्यक्तिकरण में छात्राओं की झिझक व संकोच आड़े आ रही थी। पूरी कक्षा के सामने एक शब्द बोलना भी उन्हें पहाड़ चढ़ने जैसा लग रहा था। धीरे-धीरे रचनात्मक गतिविधियों के लगातार प्रयोग से छात्राएँ रुचि लेने लगीं, उनकी झिझक खुलने लगी। अब बिना संकोच किए अपने अध्यापकों की भी हू-ब-हू नकल अभिनय द्वारा प्रदर्शित करने लगी हैं। यह सतत एवं समग्र मूल्यांकन शिक्षा पद्धति का ही परिणाम है कि हम कक्षा के प्रत्येक छात्रा के बारे में जान पाए कि कौन-सी छात्रा क्या सीखने व सोचने में कितना दक्ष हो पाई है।

सतत एवं समग्र मूल्यांकन शिक्षा प्रणाली वास्तव में छात्र-छात्राओं के संपूर्ण व्यक्तित्व के विकास में सहायक सिद्ध होगी। बशर्ते हम इसे सही तरीके से प्रयोग कर पाए तो यानि कि सकारात्मक रूप से प्रयोग करें, महज औपचारिक रूप से नहीं, तो शिक्षार्थियों को किसी संस्था में जाकर अभिव्यक्ति व साक्षात्कार के लिए अलग से प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं है। क्योंकि वह अपनी कक्षा रूपी प्रयोगशाला में एक प्रयोगकर्ता की भाँति अपने विचारों के अभिव्यक्तिकरण के लिए स्वतंत्र हैं। उन्हें पुस्तकीय पाठ्यक्रम से बाहर निकलने की अनुमति भी है। किसी-भी विषय पर अपने स्वतंत्र विचार संप्रेषण करने की स्वतंत्रता भी। प्रस्तुतिकरण करते-करते उसके आत्मविश्वास का स्तर बढ़ रहा है। अब धीरे-धीरे उसकी झिझक पूरी कक्षा के समक्ष कम हो रही है। वह थोड़ा-थोड़ा खुलने लगा है, क्योंकि उसे ज्ञात है कि उसकी गतिविधियाँ प्रत्येक विषय में उसके मूल्यांकन का आधार बन गई हैं। इसलिए उसे अपना सर्वोत्तम क्रियाकलाप करके दिखाना है। अभी तक पूरे वर्ष के मूल्यांकन का आधार उसकी वार्षिक परीक्षा ही थी, किंतु अब इसके विपरीत उसका रचनात्मक एवं भावात्मक मूल्यांकन भी संकलित परीक्षा के साथ समाहित हो गया है। सतत एवं समग्र मूल्यांकन शिक्षा पद्धति छात्र के ज्ञानात्मक पहलू का ही मूल्यांकन न होकर उसके संवेगात्मक व सामाजिक पक्ष का भी मूल्यांकन करती है। यह पद्धति वाँछित परिवर्तन को एक दिशा देती है। इस मूल्यांकन पद्धति में सह-शैक्षणिक तथ्यों का उतना ही महत्त्व है जितना कि शैक्षणिक तथ्यों का। शिक्षण को सफल एवं प्रभावशाली बनाने के लिए परिवर्तन एवं प्रोत्साहन का एक प्रक्रिया की भाँति प्रयोग किया गया है। सतत एवं समग्र मूल्यांकन शिक्षा पद्धति में प्रत्येक रचनात्मक गतिविधि के मूल्यांकन का आधारबिंदु है। जैसे-हिंदी शिक्षण में कविता पाठ एक गतिविधि के रूप में हमने प्रयोग किया और रचनात्मक अभिव्यक्ति का एक भाग

माना तथा हम उसके विभिन्न बिंदुओं के अंक निर्धारित कर देते हैं। अंक विभाजन निम्नवत् है- जैसे-यदि कुल अंक-10 हुए तो प्रस्तुतीकरण-03, हाव-भाव-02, लय-ताल-02, उच्चारण-02, चित्र-01। यह अध्यापक पर निर्भर करता है कि वह कितनी गतिविधियाँ करा सकता है। उसके आधार पर अंक कम या ज़्यादा भी हो सकते हैं। प्रत्येक गतिविधि के अंक विभाजन के आधार पर छात्राओं के व्यवहार को मापने में आसानी हो गई है। छात्राओं के प्रत्येक गुण का बारीकी से अध्ययन करने की क्षमता भी इसी मूल्यांकन पद्धति का परिणाम है। विभिन्न जीवन कौशलों के आधार पर सतत एवं समग्र मूल्यांकन शिक्षा पद्धति अपनी गुणवत्ता को सिद्ध करने में सहायक है।

सतत एवं समग्र मूल्यांकन शिक्षा पद्धति ने पूर्व शिक्षा पद्धति का स्थान ले लिया है। इस परिवर्तन से मन में जो द्वंद्व चल रहा है, मैंने उसे एक कविता के रूप में अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है-

सोच रहा शिक्षक परिवार,
आओ मिलकर करें विचार।
इस नवीन शिक्षण का सार,
मूल्यांकन का क्या आधार।

सतत निरीक्षण करें निरंतर,
गतिविधियाँ नव-नव प्रयोग कर।
रचनात्मक भावात्मक स्तर,
अंक विभाजन का अधिकार।
सोच रहा शिक्षक परिवार।

सतत निरीक्षण ज्ञान पिटारी,
द्वंद्व चल रहा मन में भारी।
परिवर्तन की है तैयारी,
सपने करने हैं साकार।
सोच रहा शिक्षक परिवार।

श्रवण, पठन, लेखन, मौखिक ही,
भाषिक कौशल के अनुभाग।
अधिभाग सफल तभी हो सकता,
जब समझें भाषा का सार।
सोच रहा शिक्षक परिवार।

अभिलेखों का संचय करके,
साक्ष्य रखें हम क्यों सहेजकर।
नृत्य करा कर गीत गवाकर,
गतिविधियाँ कर लें तैयार।
सोच रहा शिक्षक परिवार।

करें बोध नव-नव अधिगम का,
रचनात्मक भावात्मक स्तर।
कर प्रयोग अब नित नव कौशल,
खोजें प्रतिभाओं का द्वार।
सोच रहा शिक्षक परिवार।

मौज कराएँ रोज़ निरंतर,
हम सब बनकर मस्त कलंदर।
गतिविधि-डमरू खूब बजाकर,
होगी अंकों की बौछार।
सोच रहा शिक्षक परिवार।

1. विद्यालय में भाषा-शिक्षण के दौरान सतत एवं समग्र मूल्यांकन शिक्षा पद्धति का प्रयोग अपनी कक्षाओं में किया और पाया कि परिचर्चा के दौरान छात्राओं ने समूह

में अपना स्थान बनाने की पूर्ण कोशिश की जिससे उनमें अपना दृष्टिकोण कुशलतापूर्वक व्यक्त करने की क्षमता विकसित हुई।

(अ) छात्राओं में तर्क करने की क्षमता का विकास होने के साथ-साथ प्रतिपक्ष का खंडन करने की क्षमता विकसित हो पाई।

(ब) इस मूल्यांकन पद्धति ने प्रत्येक छात्रा को अभिव्यक्ति का अवसर दिया है। अत: अन्य छात्राओं से स्वयं की तुलना करके स्वयं अपनी कमी को खुद पहचाना जा सका।

(स) छात्राओं में समुचित संवाद स्थापित करने व अपनी बात को संप्रेषित करने की योग्यता का विकास हुआ।

2. छात्राओं में पाठ्यपुस्तक की परिधि के बाहर सोचने की क्षमता का विकास हुआ। उदाहरण के तौर पर विद्यालय में कविता लेखन प्रतियोगिता का आयोजन हुआ जिसमें 'वृद्धावस्था सम्मान के साथ' विषय पर कविता लिखनी थी। एक छात्रा ने बड़ी ही मार्मिक कविता लिखी (क्यों आज ठोकर खा रहे हैं बुजुर्ग हमारे, आओ मिलकर हम सब सोचें-विचारें) और उसकी कविता क्षेत्रीय स्तर पर चुनी भी गई। उस छात्रा का मनोबल इतना बढ़ गया है कि प्राय: नए विषयों पर कविता लिखने लगी है।

3. छात्राओं ने कहा कि गतिविधियों व चुनौतियों को उत्साहपूर्वक स्वीकार किया व दिए गए किसी कार्य में असफल होने पर भी हताश नहीं हुई। अपितु पुन: उनमें उस कार्य को करने की प्रवृत्ति देखी गई।

4. सामूहिक गतिविधियों ने छात्राओं का तनाव काफी कम कर दिया। अब छात्राएँ तनाव की स्थिति में भी अपने समूह से अलग रहना नहीं चाहती। अच्छा कार्य करने पर प्रशंसा पाने के लिए लालायित रहती हैं चाहे वह उसके लिए तालियाँ ही क्यों न हों।

5. कठिन परिस्थितियों में छात्राओं ने अपने शिक्षक व सहपाठिनों से नि:संकोच सहायता ली। क्योंकि गतिविधियों में सभी की सहभागिता की आवश्यकता थी।

6. छात्राओं में परियोजना कार्य के अनुसार शोधपरक और प्रासंगिक सामग्री एकत्र करने की रुचि विकसित हो पाई। मैंने ग्रीष्मावकाश गृहकार्य में परियोजना कार्य के अंतर्गत आई.पी.एल. क्रिकेट विषय दिया था। छात्राओं ने आँकड़ों सहित सचित्र विवरण विभिन्न समाचार पत्रों के आधार पर दिया। कुल टीम तथा फाइनल तक पहुँचने वाली टीमों का विस्तृत वर्णन दिया। विजेता टीम पर छात्राओं ने बड़ी ही सुंदर टिप्पणियाँ की हैं। खिलाड़ियों के व्यक्तिगत कौशल की ओर भी ध्यान आकर्षित कराया व उन्हें विभिन्न उपमाओं से अलंकृत किया। छात्राओं की परियोजना को पढ़कर व देखकर उनकी क्रियात्मकता

के बारे में पता चला। यदि सतत एवं समग्र मूल्यांकन पद्धति न होती तो शायद उनकी खूबियों के बारे में हमें कभी पता न चल पाता।

7. छात्राएँ परियोजना कार्य में विभिन्न शब्दकोष, समाचार पत्र, इंटरनेट द्वारा प्राप्त सूचनाओं का प्रयोग करना स्वयं सीख रही हैं।

❑❑❑

हाल ही में, एक शिक्षिका मुझे हाशिए पर रहने वाले बच्चों के साथ अपने काम के बारे में बता रही थीं जो या तो पढ़ नहीं पाते थे, या पढ़ते नहीं थे। बात-बात में उन्होंने कहा, ''हमारे पास कक्षा में ढेरों किताबें हैं और सभी उसको इस्तेमाल करते हैं। पर वे उसे पढ़ते नहीं है। वे सिर्फ़ पन्नें पलटते हैं और उन्हें देखते हैं। मैं कैसे पढ़ने में उनकी रुचि जगाउँ? मैंने एक-दो बातें बताई जो शायद उस समय उन्हें ठीक लगीं। मुझे बाद में ये बात समझ में आई कि इन बच्चों ने शायद कभी पहले कोई किताब नहीं देखी, उनके लिए सरसरी तौर पर किताबों को देखना, पढ़ने की एक लाज़मी और आवश्यक पहली सीढ़ी थी। इससे पहले कि वे बच्चे सोचते कि कोई शब्द या शब्दों का समूह क्या कहता है उनके लिए शब्दों की सूरत से परिचित हो जाना बेहद ज़रूरी है। ठीक उसी तरह जिस प्रकार एक बच्चा जो बोलना सीख रहा है उसके लिए बात करने की आवाज़ से परिचित होना बहुत ज़रूरी है। अधिकांश बच्चे, जब वे पढ़ना शुरु करते हैं, वर्णों को देखते और उन पर गौर करते हैं। यही वे अनुभव है जिनकी खानापूर्ति वंचित बच्चों को करनी पड़ती है।

जॉन होल्ट